अध्ययन सामग्री

विषय- हिन्दी

सेमेस्टर- प्रथम(1) स्नातकोत्तर

प्रश्न पत्र- प्रथम(cc-1)

अपभ्रंश और पुरानी हिंदी का सम्बंध

पदनाम- डॉ स्मिता जैन

एसोसिएट प्रोफेसर

हिंदी विभाग

एच डी जैन कॉलेज, आरा

22:

Scanned with CamScanner

अपभ्रंश (अवहट्ट सहित) और पुरानी हिन्दी का सम्बन्ध

अपभ्रंश का काल मोटे रूप से 1000 या 1100 ई. के लगभग समाप्त होता है और इसके बाद आधुनिक भाषाओं का आरम्भ होता है। किन्तु, आरम्भ के लगभग दो-तीन सौ वर्षों की भाषा अपभ्रंश और आधुनिक भाषाओं के बीच की है, अर्थात् शुरू में उसमें अपभ्रंश की प्रवृत्तियाँ अधिक हैं, किन्तु धीरे-धीरे वे कम होती गई हैं और आधुनिक भाषाओं की प्रवृत्तियाँ बढ़ती गई हैं और अन्त में 14वीं सदी के लगभग आधुनिक भाषाओं का निखरा हुआ रूप सामने आ गया है। यह बीच का काल संक्रान्तिकाल है।

'संनेहयरासक', 'प्राकृत पैंगलम', 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण', 'वर्ण-रत्नाकर', 'कीर्तिलता' और 'ज्ञानेश्वरी' आदि की भाषा इसी काल की है। इस भाषा के लिए परवर्ती अपभ्रंश, पुरानी हिन्दी, देशी आदि कई नामों का प्रयोग किया गया है। किन्तु, कुछ लोगों के अनुसार इसके लिए 'अवहट्ट' नाम अधिक उपयुक्त है।

वस्तुतः "अवहट्ट" शब्द संस्कृत शब्द 'अपभ्रंश' का विकसित, विकृत या अपभ्रष्ट रूप है और विष्णुधर्मोत्तर पुराणकर्ता ने जैसे 'अपभ्रंश' के लिए "अपभ्रष्ट" का प्रयोग किया है, उसी प्रकार ज्योतिरीश्वर ठाकुर (वर्ण-रत्नाकर), विद्यापति (कीर्तिलता), तथा वंशीधर (प्राकृत पैंगलम की टीका

आदि ने अपभ्रंश के लिए ही 'अवहट्ट'
या उसके रूपों का प्रयोग किया है।
उसके किसी विशेष रूप के लिए उसका
प्रयोग कदापि नहीं है।

प्रत्येक दो भाषाओं के
संधिस्थल पर जिनका आपस में माँ-बेटी
का सम्बन्ध होता है, संक्रान्तिकालीन रूप
होते हैं, उसके लिए किसी अन्य नाम की
आवश्यकता नहीं। यों प्रसंगतः इसे किसी
नाम से पुकारना ही हो तो परवर्ती अपभ्रंश
या पुरानी (हिन्दी, गुजराती, बंगाली) आदि
अधिक ठीक है।

[अवहट्ट को कुछ लोगों ने अपभ्रंश
और आधुनिक भारतीय भाषाओं के बीच की
कड़ी माना है। परन्तु ऐसा नहीं है। वस्तुतः
अपभ्रंश के लिए जो अनेक प्रचलित मिले हैं,
'अवहट्ट' उन्हीं में से एक है।]

आधुनिक आर्यभाषाओं का
जन्म अपभ्रंश के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों से
इस प्रकार हुआ है —

(1) शौरसेनी अपभ्रंश — { पश्चिमी हिन्दी,
राजस्थानी हिन्दी
गुजराती
पहाड़ी }

(2) अर्द्धमागधी अपभ्रंश — पूर्वी हिन्दी

(3) मागधी अपभ्रंश — { बिहारी हिन्दी, बंगला, असमिया, उड़िया }

(4) पैशाची अपभ्रंश — { लहंदा, पंजाबी }

(5) ब्राचड़ अपभ्रंश — सिन्धी

(6) महाराष्ट्री अपभ्रंश — मराठी

इससे स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा का उद्भव अपभ्रंश के शौरसेनी, अर्द्धमागधी, मागधी रूपों से हुआ है।

हिन्दी भाषा अपने आदिकाल में सभी बातों में अपभ्रंश के बहुत अधिक निकट थी, क्योंकि उसी से हिन्दी का उद्भव हुआ था। आदिकालीन हिन्दी में मुख्यतः उन्हीं ध्वनियों (स्वरों - व्यंजनों) का प्रयोग मिलता है जो अपभ्रंश में प्रयुक्त होती थी।

अपभ्रंश के अन्तिम चरण में प्रारंभिक हिन्दी की झलक मिलने लगती है। हिन्दी के इस प्रारंभिक रूप को 'अवहट्ट' भी कहा गया है। सन् 1000 से 1500 ई० तक का समय हिन्दी का विकास काल है। हिन्दी का जन्म 1000 ई. के आसपास यही वह समय था जब अपभ्रंशों से आधुनिक आर्य भाषाएं अलग होने लगी थीं। उनका स्वतंत्र भाषा रूप उभरने लगा था।

इस काल में जिस साहित्यिक सामग्री से हिन्दी भाषा के विकास की जानकारी मिलती है, उनमें ऐतिहासिक दस्तावेज, शिलालेख, ताम्रपत्र

आदि प्रमुख हैं। साहित्यिक रचनाओं में सिद्धों (सरहपा), और जैन (पुष्पदन्त) की रचनाएँ प्रमुख हैं। इन रचनाओं में हिन्दी के प्रारंभिक रूप सुरक्षित हैं।

इसके अतिरिक्त रासो ग्रन्थों और मुसलमान कवियों की रचनाओं में हिन्दी के विकासमान रूप देखे जा सकते हैं। प्रमुख रचनाकारों में गोरखनाथ, विद्यापति, नरपति नाल्ह, कबीर, ख्वाजा बन्दा नेवाज, अब्दुल रहमान और अमीर खुसरो प्रमुख हैं।

शब्द-समूह की दृष्टि से प्रारंभिक हिन्दी पर अपभ्रंश का प्रभाव है। इसे हम अपभ्रंश-हिन्दी भी कह सकते हैं जिसमें तद्भव शब्दों का अधिक प्रयोग किया गया है। प्रारंभिक काल की हिन्दी में अरबी-फारसी के शब्दों की संख्या कम है। इस काल के साहित्य में प्रमुख रूप से डिंगल, मैथिली और दक्खिनी के मिश्रित रूपों का प्रयोग किया गया है।

मध्यकाल (1500-1800ई) में हिन्दी प्रदेश की उपभाषाओं से अपभ्रंश का प्रभाव बिल्कुल हट गया था और हिन्दी प्रदेश की उपभाषाएं, विशेषतया, खड़ी बोली, ब्रज और अवधी अपने पैरों पर स्वतन्त्रतापूर्वक खड़ी हो गई थीं।

आधुनिक काल (1800 ई. के बाद)- जब से हिन्दी प्रदेश की उपभाषाओं के मध्यकाल के रूप में परिवर्तन आरंभ हो गया है तथा साहित्यिक प्रयोग की दृष्टि से खड़ी बोली ने हिन्दी प्रदेश की अन्य उपभाषाओं को दबा दिया है,